[सरदार अ० सि० सहगल]

हमारे म्यूजिक के प्रोग्राम में आप देखें कि अप्रैल १९५६ के महीने में क्लासिकल वोकल के १२१४, क्लासिकल इंस्ट्रूमेंट के ७८३, फोक ोकल के ११८, लाइट वोकल के ८५१ और लाइट म्यूजिक इंस्ट्रूमेंट के ९० प्रोग्राम हुए। अब आप देखें कि मार्च १९५७ में हम कहां पहुंचे हैं। आपको फिगर्स देखने से मालूम होगा कि मार्च १९५७ में क्लासिकल म्यूजिक के १३४८, क्लासिक इंस्ट्रूमेंट के ८७७, फोक वोकल में १६८, लाइट वोकल में १०६३, लाइट इंस्ट्रूमेंट में ११७, प्रोग्राम ए।

फील्ड पबलिसिटी आर्गनाइजेशन ने सन् १९५६-५७ में ९५२८ जगहों का दौरा किया और वहां पर १०,५७७ फिल्म शो दिखलायें और ६६९५ सार्वजनिक सभायें संगठित की और उनमें लोगों को बतलाया। सन् १९५३-५४ में इस प्रकार के शो आदि ५० लाख आदमियों को दिखाये गये जब कि सन् १९५६-५७ में १४० लाख लोगों को इन प्रोग्रामों से फायदा हुआ। फिल्म डिवीजन ने अपनी कुछ फिल्म दूसरे लोगों को दी। उनसे सन् १९५३-५४ में जहां ३४.४९ लाख की आमदनी हुई वहां सन् १९५६-५७ में ४०.४५ लाख की आमदनी हुई। सले मालूम होता है कि हमारे फिल्म डिवीजन की कितनी उन्नति हो रही है। इसी के साथ ही साथ आप देखें कि १-४-५३ से ३१-३-५३ तक जनरल पबलिसिटी की ७११८ फिल्म्स स्टेट गवर्नमेंट्स को दी गयीं, ३५८५ सें ल गवर्नमेंट फोल्ड यूनिट्स को दी गयी, १५९६ डेवेलपमेंट कमिश्नर्स को दी गयी, ७९९ फिल्म डि िजन के ब्रांच आफिसेज को दी गयी, और २५ एग्जिबोशन डिवीजन को दी गयीं, इस तरह से कुल १३,१२८ फिल्में इन विभिन्न संस्थाओं को दी गयीं।

इसके अलावा आप देखेंगे कि जो हमारे डाकूमेंट ी फिल्म बने हैं उनमें से बहुतों विदेशों में बहुत नाम पैदा किया है जैसे गौतम बुद्ध, भारत दर्शन, ताजूराही आदि।

हमारे पबलिकेशन डिवीजन ने सन् १९५६-५७ में २८३ किताबें निकालीं और इसके पहले स १९५३-५४ में इस डिवीजन ने कुल ७३ किताबें निकालीं थीं। इससे हाउस समझ सकता है कि हम अग्रसर हो रहे हैं या नहीं। इसी तरह से आप देखें कि स डिवीजन ने सन् १९५२-५३ में २.९४ लाख की किताबें बेचीं जब कि १९५६-५७ में १९.८५ लाख की बेचीं।

इस दिशा में भी हम अग्रसर हो रहे हैं।

इसके अलावा आप देखें कि जिस किताब का मूल्य सन् १९५१-५२ में ४ रु० ३ आना ११ पाई था उसका मूल्य स १९५६-५७ में १ रुपया १० आना ४ पाई हो गया। छपाई के खर्चे को स तरह से कम करके हम बहुत सस्ते में उत्तम साहित्य जनता को सुलभ कर रहे हैं।

अन्त में मैं माननीय मंत्री महोदय से यह निवेदन करूंगा कि यह जरूरी है कि छत्तीस गढ़ी भाषा के लिए भी एक छोटा सा रेडियो स्टेशन बनावें और जो मध्यप्रदेश का ब्राड-कास्टिंग स्टेशन है उसको बढ़ावें। मैं यह नहीं कहता कि इस काम को आज ही करें। मैं तो कहता हूं कि जब आप सुविधापूर्वक कर सकें तब करे। मैं आपसे छत्तीसगढ़ी भाषा के स ीत का प्रसार करने के लिए प्रार्थना करूंगा।

इन शब्दों के साथ जो डिमाण्ड्स रखी गयी हैं उनका मैं समर्थन करता हूं।

WITHDRAWAL OF PROPOSED STRIKE BY P. AND T. EMPLOYEES

Mr. Deputy-Speaker: Shrimati Uma Nehru. Before the hon. Member commences her speech, I would like to call upon the Minister of Transport and Communications to make a statement.

The Minister of Transport and Communications (Shri Lal Bahadur Shastri): I shall take only two minutes.

The House will be glad to know that the General Secretary of the P and T Federation has informed that the strike has been called off.

I would merely like to congratulate the Federation for the wise decision they have taken and I am quite certain that it will give great relief to all the people in our country who were greatly exercised over this matter.

Shri C. K. Bhattacharyya (West Dinajpur): Should we not congratulate our Ministers?

An Hon. Member: By all means.

DEMAND FOR GRANTS—*Contd.*

MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING—*contd.*

श्रीमती उषा मेहरा (सीतापुर): श्रीमान्, इनफार्मेशन और ब्राडकास्टिंग का महकमा बड़े महत्व का है। जिसके हाथ में यह महकमा होता है वह वह अच्छा भी कर सकता है और बुरा भी कर सकता है। आज हमको इस महकमे की उन्नति देखकर बड़ी खुशी होती है। दस वर्ष पहले जिस वक्त हुकूमत हमारे हाथ में आयी थी उस वक्त इस महकमे की बुरी हालत थी। ब्राडकास्टिंग स्टेशन में तो बिल्कुल सफा मैदान था।

इस सिलसिले में हमारे मिनिस्टर साहब ने बड़ी मेहनत की और हमारे वर्कर्ज ने भी बड़ा काम किया। मैं उन सब को बधाई देना चाहती हूं। ब्राडकास्टिंग की यह तरक्की देख कर सारे देश को खुशी होती है। मुझे खास तौर से इसलिये खुशी होती है कि मैं इस मिनिस्ट्री की रिपोर्ट में देखती हूं कि इस देश की तमाम जबानों को—हिन्दुस्तान की चौदह रिजनल लैंगुएजिज को—ब्राडकास्टिंग के प्रोग्राम में जगह दी गई है और उन सब की तरक्की की गई है। मैं समझती हूं कि अपनी लैंगुएजिज को—और खास तौर से यहां की रिजनल लैंगुएजिज को और देहाती जबानों को—चारों तरफ, सारे देश में फैलाना और उन को पापुलर बनाना एक बहुत अच्छी बात है। मुझे याद है कि जब मैं चाइना पहुंची, तो स्टेशन पर रेडियो खूब बज रहे थे—मैं जिधर गई, उधर रेडियो को आवाज आने लगी। शुरू शुरू में मैं यह समझी कि शायद यह हमारे डेलीगेशन का स्वागत हो रहा है, लेकिन मुझे एक चीनी से मालूम हुआ कि यह बात नहीं है। दरअसल बात यह है कि वहां पर रेडियो बहुत बड़ा काम करता है। वहां पर शिक्षा का काम, हैल्थ के बारे में प्रचार और माइनोरिटी लैंगुएजिज का काम सब रेडियो से होता है। वहां हर वक्त इस किस्म के एलान होते रहते हैं कि "फल खा कर छिलके जमीन पर मत फैंको, डस्टबिन में फैंको", "मक्खियां फलां फलां बीमारियां फैलाती हैं", वगैरह वगैरह। मैं चाहती हूं कि भारत में भी ऐसा ही नक्शा हो। हम लोग भी मक्खियों से बहुत परेशान हैं। हम चाहते हैं कि यहां से मक्खियां बिल्कुल चली जाय।

स्पेशल प्रोग्राम मैं बड़ी दिलचस्पी से सुनती हूं, खास तौर पर उन प्रोग्रामों को, जिन में रिजनल कल्चर्ज की बात होती है। मैं खुद तो गाती नहीं हूं, लेकिन गाने की शौकीन हूं। मुझे गाना पसन्द है। इस बात में कोई शक नहीं कि क्लासिकल म्यूजिक अच्छा होता है और मुझे पसन्द भी है, लेकिन हम को दुनिया की रविश के साथ चलना है। आज-कल दुनिया की हालत यह है कि लोग फ़िल्मी गानों के बड़े शौकीन हो गये हैं और ज्यादातर फ़िल्मी गाने ही चाहते हैं, जैसे "लारा लप्पा" है। मुझे खुशी है कि हमारे ब्राडकास्टिंग स्टेशनों ने लाइट म्यूजिक में भी उन्नति की है। लाइट म्यूजिक के प्रोग्राम में जो गीत और भजन वगैरह होते हैं, मैं उन को सुनती रहती हूं और वे काफ़ी अच्छे होते हैं, लेकिन हमारे नौजवानों को उस से भी ज्यादा की जरूरत है। मैं चाहती हूं कि हमारे मिनिस्टर साहब इस बात पर गौर करें और लाइट म्यूजिक के प्रोग्राम को और आगे बढ़ायें।